सार

'सार सार को गहि लहै, थोथा देई उड़ाए' अर्थात् सार को ग्रहण करते हुए असार को छोड़ते जाना सार लेखन की प्रक्रिया है और उस सार को प्रकट करने के लिए उसकी भाषा में कसावट और स्पष्टता होनी चाहिए। 'गागर में सागर' भरने की प्रवृत्ति सार लेखक के लिए आवश्यक है। गोपीनाय श्रीवास्तव सार लेखन को इन शब्दों में पारिभाषित करते हैं–**''किसी विस्तृत विवरण, वक्तव्य, पत्र-व्यवहार, लेख आदि के तथ्यों एवं निर्देशों के सुरुचिपूर्ण संयोजन को, जिसमें अप्रासंगिक, असम्बद्ध, पुनरावृत्त, अनावश्यक बातों का बहिष्कार तथा समस्त, अनिवार्य, उपयोगी एवं मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण और संक्षिप्त संकलन हो सार लेखन कहते हैं।''** इस परिभाषा में श्री वास्तव ने सार लेखन के आवश्यक गुणों, क्षेत्र और उसके स्वरूप को स्पष्ट किया है। मूल अनुच्छेद (वक्तव्य, लेख आदि) की आत्मा (भावों) को सुरक्षित रखते हुए उसे लघु रस में प्रस्तुत करना ही सार लेखन है। सार लिखते समय न तो किसी महत्त्वपूर्ण (मूल) भाव को छोड़ना चाहिए और न ही उसे स्पष्ट करने के लिए अपनी ओर से कुछ जोड़ना चाहिए। सार लेखन में मूल कथन के भागों को संक्षेप में अथवा सारांश रूप में प्रस्तुत करने के लिए न तो शब्द-सीमा का विधान होता है और न ही सभी विचारों/भावों को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने का आग्रह रहता है। जबकि संक्षेपण में मूल के भावों को एक तिहाई शब्दों में क्रम से प्रस्तुत किया जाता है। किसी भी संदेश का सार बताने के लिए हमें उस संदेश को अच्छे से समझना चाहिए, उसका उद्देश्य भी समझ कर पचा कर सार लिखना चाहिए।

सार लेखन : उपयोगिता

वर्तमान जीवन में प्रत्येक वस्तु का मूल्यांकन उसकी उपयोगिता के आधार पर किया जाता है। इसलिए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि सार लेखन के अभ्यास से विद्यार्थी को अपने जीवन में क्या लाभ प्राप्त होगा? इस संदर्भ में यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि इसके अभ्यास से विद्यार्थियों को पर्याप्त लाभ प्राप्त होता है। वे किसी भी पुस्तक अथवा लेख के महत्त्वपूर्ण तथ्यों को व्यर्थ

Scanned with CamScanner

की बातों से पृथक् करने में अभ्यस्त हो जाते हैं। इससे उनकी ग्रहण शक्ति और निर्णयात्मक बुद्धि का विकास होता है।

सार-लेखन के अभ्यास से भाषा-प्रयोग की क्षमता बढ़ती है। कथ्य के प्रभावी संप्रेषण के लिए कौन-कौन से शब्दों का प्रयोग करना चाहिए और कौन-कौन से शब्द छोड़ देने चाहिए, द्विअर्थक शब्दों का प्रयोग कब और कहाँ करना चाहिए, संदर्भ के बदल जाने पर कोई शब्द संप्रेषण का कितना प्रभावी माध्यम बन सकता है या फिर उसका पैनापन और प्रभाव कितना कम हो जाता है, विराम चिह्नों के विवेकपूर्ण प्रयोग से हम किस प्रकार अपने कथन को संक्षिप्त और प्रभावशाली बना सकते हैं, आदि का व्यावहारिक ज्ञान सार लेखन के अभ्यास से ही आता है। सार लेखन का अभ्यास ही भाषा-भंडार की अभूतपूर्व वृद्धि करता है। समग्रत: यह हमें अपने विचारों को स्पष्ट, तारतम्यपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक ढंग से व्यक्त करने की कला सिखाता है। यही कारण है कि प्राचीन काल से आज तक सार-लेखन का महत्त्व स्वीकार करने के साथ-साथ नियमित अभ्यास पर अधिकाधिक बल दिया जाता रहा है।

प्राचीन काल में राजदरबारों में सार लेखन कला को एक उपयोगी कला माना जाता था। इंग्लैंड की महारानी एनी के दरबार में एक सार लेखक की नियुक्ति की गई थी, जिसे महारानी के निजी सचिव के बराबर वेतन मिलता था। आजकल लगभग सभी देशों के सरकारी काम-काज में सार लेखन एक अनिवार्य अंग है। सच तो यह है कि यदि सरकारी कार्यालयों में सारलेखन का उपयोग न किया जाए तो प्रशासनिक कार्य लगभग ठप्प हो जाएगा। इसका कारण यह है कि प्रत्येक कार्यालय में प्रतिदिन इतने अधिक पत्र आते हैं, जिनका पूरा पढ़ना उच्च अधिकारी के लिए नितांत असम्भव होता है। इसीलिए उच्च अधिकारी के सामने सभी पत्रों को सार रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

सार लेखन का अभ्यास पत्रकारिता जगत में भी बहुत फायदोमंद है। यदि कोई पत्रकार सार लेखन की कला से अनभिज्ञ है तो वह अपने समाचार पत्र के लिए समाचारों के प्रभावी संप्रेषण में समर्थ नहीं हो सकेगा। कोई भी समाचार-पत्र किसी समारोह, गोष्ठी अथवा संवाददाता सम्मेलन आदि में किसी साहित्यकार अथवा नेता द्वारा दिए गए भाषण को उसी रूप में प्रकाशित नहीं कर सकता। पत्रकार या संवाददाता को तो उसमें से महत्त्वपूर्ण और उपयोगी अंश को ही लिखना होता है।

सार लेखक के गुण

सार लेखन-कला में कुशलता हासिल करने के लिए सार लेखक में निम्नांकित गुणों का होना आवश्यक है।

1. **विशद ज्ञान**—अच्छा सार लेखक बनने के लिए विविध विषयों का ज्ञान होना चाहिए। समय-समय पर विज्ञान, समाज-विज्ञान, मानविकी आदि विषयों का अध्ययन करते रहना चाहिए। इससे विभिन्न विषयों की आधारभूत संकल्पनाओं का ज्ञान हो जाता है। यह संकल्पनात्मक ज्ञान सार-तत्त्व को छाँटने में बहुत सहायता करता है। विविध विषयों की जानकारी रखने वाले व्यक्ति के लिए महत्त्व पूर्ण तथ्यों को गैर महत्त्वपूर्ण तथ्यों से अलगाने में कोई परेशानी नहीं होती।

2. **कुशाग्र बुद्धि**—अच्छा सार तैयार करने के लिए सार लेखक का कुशाग्र बुद्धि होना भी आवश्यक है। उसमें अनुच्छेद में दिए गए तथ्यों को समझने, परखने तथा सही वाक्य रचना में अन्वित करने की सूझ भी होनी चाहिए। ये कार्य मंद बुद्धि व्यक्ति सम्पन्न नहीं कर सकता।

3. **एकाग्रता**—अच्छा सार तैयार करने के लिए चित्त की एकाग्रता भी अत्यन्त आवश्यक है। इससे सार लेखक में सार तत्त्व ग्रहण करने की क्षमता विकसित होती है। वह जटिल से जटिल विषय को भी मन से समझने में समर्थ हो पाता है।

4. **विवेचनात्मक क्षमता**—एक कुशल सार लेखक में विवेचनात्मक क्षमता का होना भी आवश्यक है। इस गुण के होने पर ही वह चयन किए गए तथ्यों की अनिवार्यता एवं उपयुक्तता जाँच पाता है। वह यह निर्णय ले पाता है कि क्या ग्राह्य है और क्या अग्राह्य यह निर्णय सार लेखन करने की सामर्थ्य प्रदान करता है।

5. **भाषा पर अचूक अधिकार**—सार लेखक का भाषा का अचूक अधिकार होना चाहिए। यह अधिकार ही उसे किसी अनुच्छेद में व्यक्त भावों को ग्रहण करते हुए कम से कम शब्दों में संप्रेषित करने की क्षमता प्रदान करता है। भाषा अधिकार ही उसे सटीक मुहावरों, लोकोक्तियों और शब्दों का चयन करने की सामर्थ्य देता है और प्रभावशाली लिखित संप्रेषण में दक्षता प्रदान करता है।

सार लेखन का महत्त्व

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि समाज में उसी व्यक्ति का आदर होता है जो थोड़े में बहुत कहने की कला में पारंपग होता है। अपने मंतव्य को

Scanned with CamScanner

विस्तारपूर्वक व्यक्त करने का दुष्परिणाम यह होता है कि हम अनेक बार मूल विषय से भटक जाते हैं। होरेस का तो यहाँ तक मानना है कि जिस व्यक्ति के मस्तिष्क में अनावश्यक बातों की भरमार होती है, केवल वही व्यक्ति अपनी लेखनी से व्यर्थ के शब्द लिखा करता है। शेक्सपियर का कहना है कि सार लेखन ही वाक् कौशल की मूल आत्मा है। रूस के प्रसिद्ध कथाकार चेखब को तो अपनी वृद्धावस्था में सार लेखन का ऐसा भूत सवार हो गया था कि उसे अपनी अथवा किसी अन्य लेखक की रचना पढ़ने पर व्यर्थ का विस्तार ही दृष्टिगत होता था।

हमारे देश में संक्षिप्तता पर अत्यंत प्राचीन काल से बल दिया जाता रहा है। प्राचीनकाल में संस्कृत व्याकरण में सूत्र पद्धति में थोड़े में बहुत अधिक कहने का महत्त्व था। संस्कृत साहित्य में सूक्तियों का भंडार भी इसी कथन की पुष्टि करता है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि बिहारी लाल थोड़े में बहुत कहने की कला में निपुण थे। अड़तालीस मात्राओं के छोटे से दोहे में एक से एक अनूठे भावों को भर देने में कुशल होने के कारण ही किसी कवि ने उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा–

सतसैया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।।

आज की भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में किसी के पास इतना समय नहीं है कि वह अत्यंत बड़े आकार की रचनाओं के अध्ययन में अपना सिर खपाए–चाहे वह कॉलेज का प्राध्यापक हो अथवा विद्यार्थी, कारोबारी हो या नेता। अतएव आज प्रत्येक व्यक्ति कम से कम समय में अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करना चाहता है।

सार लेखन विधि

सार लेखन का आधुनिक युग में जीवन के विविध क्षेत्रों-प्रशासनिक, व्यावसायिक, साहित्यिक एवं पत्रकारिता जगत में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। वस्तुत सार लेखन की आज के व्यस्त जीवन में सर्वत्र मान्यता है। सार लेखन वास्तव में एक कला है, जिसे अभ्यास के द्वारा ही सीखा जा सकता है। इसके लिए सार लेखक में प्रतिज्ञा, भाषा पर अधिकार और निरंतर अभ्यास जैसे गुण होने चाहिए। इसके लेखन की कोई बंधी-बंधाई विधि नहीं है। फिर भी सार लेखन में निम्नांकित बातों पर ध्यान दिया जा सकता है–

1. **मूल अनुच्छेद को ध्यान से समझ कर पढ़ना**–मूल अनुच्छेद को ध्यान से दो-तीन बार पढ़कर केंद्रीय भाव को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। केंद्रीय भाव को चुनकर लिख लीजिए क्योंकि इसी से शीर्षक का चुनाव करना होता है।

2. **महत्त्वपूर्ण अंशों एवं तथ्यों का रेखांकन**–मूल अनुच्छेद को पढ़ते समय उसके महत्त्वपूर्ण अंशों को रेखांकित करके अनावश्यक अंशों को छोड़ देना चाहिए। इन महत्त्वपूर्ण अंशों के आधार पर एक रूपरेखा तैयार करके उसका मूल अनुच्छेद से मिलान कर लेना चाहिए ताकि कोई आवश्यक तथ्य छूट न जाए। इन महत्त्वपूर्ण अंशों के आधार पर सार लिखना चाहिए। अनुच्छेद में आए कठिन अंशों की चिंता किए बिना मूल भाव को समझकर अलंकृत शब्दावली उदाहरण, उद्धरण और अनावश्यक विशेषणों को छोड़ देना चाहिए।

3. **क्रमबद्धता एवं सुसम्बद्धता**–सार लेखन में मूल अनुच्छेद के विचार क्रमबद्ध एवं सुसम्बद्ध रूप में अन्वित किए जाने चाहिए। कभी-कभी मूल अनुच्छेद में विचार/भाव बिखरे हुए होते हैं, ऐसी स्थिति में उन्हें सही ढंग से नियोजित कर लेना चाहिए। विचारों/भावों को क्रमबद्ध ढंग अर्थात् कारण-कार्य ढंग से सुसंबद्ध कर लेने से कई बार सार मूल अनुच्छेद से भी अधिक प्रभाव पूर्ण हो जाता है।

4. **शीर्षक का चुनाव**–सार लिख लेने के पश्चात उसका उपयुक्त एवं सार्थक शीर्षक का चुनाव करना भी एक कला है जो निरन्तर अभ्यास से ही निखरती है। शीर्षक में मूल प्रतिपाद्य/मुख्य विचार का संकेत रहता है। अत: शीर्षक का निर्धारण मूल अनुच्छेद के केंद्रीय भ्वाव/विचार पर किया जाना चाहिए। शीर्षक लघु होने के साथ-साथ सार्थक होना चाहिए। अनुच्छेद के प्रारम्भ, मध्य या अंत में कहीं भी शीर्षक का संकेत मिल सकता है। उसमें केंद्रीय भाव निहित होता है।

5. **पुनर्गठन**–सार लिख लेने के बाद उसे एक बार फिर पढ़ लेना चाहिए और यदि उसमें तथ्यात्मक अथवा भाषाशैली गत किसी भी प्रकार की त्रुटि रह गई हो तो उसे दूर कर लेना चाहिए।

इस प्रकार सार लेखन की प्रमुख विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए ऊपर लिखित विधि का अनुसरण करने से सार लेखक अच्छा सार लिख सकता है।

Scanned with CamScanner

अन्वय

उपयोगिता

भाषा का एक मात्र प्रयोजन और प्रकार्य संप्रेषण (Communication) है। संप्रेषण की सार्थकता वक्ता-श्रोता (लेखक-पाठक या सम्बोधक-संबोधित) के ऐसे वार्तालाप से सम्भव है, जिसे वे भली भाँति समझकर उसका तात्पर्य ग्रहण कर सकें। यह तभी सम्भव है, जब भाषा का प्रयोग, व्यवस्थाबद्ध, व्याकरणबद्ध तथा परम्परा में बहु प्रचलित एवं प्राय: सर्वमान्य रूप में हो। भाविक संरचना की अपनी एक व्यवस्था है। उस व्यवस्था के अनुकूल भाषिक प्रयोग ही संगत, साभिप्राय व शुद्ध माने जा सकते हैं। 'बालक-टूटना-का-रोना-का खिलौना' आदि शब्दों के उच्चारण या इन्हें लिपिबद्ध कर देने मात्र से अर्थ संप्रेषित नहीं हो पाएगा, क्योंकि इन भाषिक ध्वनियों अथवा उनसे संरचित शब्दों में संरचनात्मक व्यवस्था (अन्वय) का अभाव है। 'खिलौना टूट जाने के कारण बालक रोने लगा,' प्रयोग इसीलिए शुद्ध है क्योंकि इसमें भाषिक संरचना-व्यवस्था (अन्वय) का निर्वाह हिन्दी व्याकरण के नियमों के अनुसार हुआ है।

किसी भी भाषा में दक्षता प्राप्त करने के लिए उस भाषा के शुद्ध रूप को जानना आवश्यक होता है। भाषा के शुद्ध रूप से अभिप्राय है–उसका व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध और परिमार्जित होना है। व्याकरण सम्मत भाषा ही शुद्ध, परिनिष्ठित, मानक और प्रौढ़ कही जा सकती है। अत: भाषा की शुद्धता हेतु व्याकरण की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है। भाषा में पारंगत होने के लिए वाक्य का अन्वय व्याकरण के नियमों के अनुसार होना चाहिए। 'अन्वय' भाषिक प्रयोग का ही एक अंग है।

हिन्दी भाषा को हिन्दी से इतर भाषाओं के भाषी, जैसे बंगाली, मराठी, गुजराती आदि या अन्य बोलियों (अवधी, ब्रज, भोजपुरी आदि) को बोलने वाले जब बोलते हैं तो कभी-कभी वे वाक्य का अन्वय हिन्दी व्याकरण के नियमों के अनुसार करने में गलती करते हैं। बिहारी और बंगाली भाषी लिंग सम्बन्धी गलतियां करते हैं–तौलिया पड़ी हैं, मैं जा रहा हूँ, मैं खाऊंगा (स्त्रीलिंग की जगह पुल्लिंग) का प्रयोग करते हैं। हिन्दी भाषा पर पड़े भाषिक और शैलीय दोष को

दूर करने के लिए 'अन्वय' शीर्षक इकाई के अंतर्गत छात्रों को व्याकरण सम्भव वाक्य का सही अन्वय करने के नियम बताए गए हैं।

अन्वय से अभिप्राय है कि शब्दों के लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि में एकरूपता होनी चाहिए। वाक्य में कर्ता और कम के अनुसार क्रिया का अथवा संज्ञा के साथ सर्वनाम का अन्वय होना आवश्यक है। जैसे–सोहन से यह बात समझाया नहीं गया के स्थान पर सोहन यह बात समझाई नहीं गई, गहने उतार फेंका प्रयोग की अपेक्षा गहने उतार फेंके।

जव अप्रत्यय कर्ता कारक वाक्य का उद्देश्य होता है, तब उसके लिंग, वचन, और पुरुष के अनुसार, क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष होते हैं तो वह अन्वय कहलाता है। जैसे, राम जाता है, तुम कब जाओगे, लड़कियाँ गीत गाती थीं, राम को गाँव को भेजा जाएगा, घंटी बजाई गई।

आदर के अर्थ में एकवचन उद्देश्य के साथ बहुवचन क्रिया आती है जैसे, राम के बड़े भाई आए हैं, बोले राम जोरि जुग पानी, मधु दीन स्त्रियों पर दया करती थीं, मंत्री सभा में बुलाए गए।

कविता में कभी-कभी विधिकाल अथवा संभाव्य भविष्यत् का मध्यम पुरुष अन्य उद्देश्य के साथ आता है, जैसे करहु सो मम उर धाम। जरौ सुसंति सदन, सुख।

जब जातिवाचक संज्ञा के स्थान में कोई समुदायवाचक संज्ञा (एकवचन में) आती है, तब क्रिया का लिंग वचन समुदायवाचक संज्ञा के अनुसार होता है, जैसे, गायों का एक झुंड जा रहा है, राम के कोई संतान नहीं हुई, मेले में बहुत भीड़ थी।

यदि पूर्ण क्रिया की उद्देश्यपूर्ति के लिंग, वचन, पुरुष, उद्देश्य के लिंग, वचन, पुरुष से भिन्न हों, तो क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष बहुधा उद्देश्य ही के अनुसार होते हैं, जैसे, वह टकसाल समझा जावेगा, (सत्य), लड़की किसी दिन पराये घर का धन होती है। (शकु.) तुम क्या से क्या हो गए (सर.). काले कपड़े शोक के चिह्न मानें जाते हैं। बाहर देश में रहने वाले लोग वहाँ के असली रहनेवालों को नष्ट करने का कारण हुए।

यदि उद्देश्यपूर्ति का अर्थ मुख्य हो अथवा उसमें उत्तम या मध्य पुरुष सर्वनाम आवे, तो क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष उद्देश्यपूर्ति के अनुसार होते हैं और उसके पूर्व संबंधकारक की विभक्ति बहुधा उसी के लिंग के अनुसार होती है, जैसे, हिज्के और रूपांतर का प्रमाण हिंदी हो सकती है, उनकी एक रकाबी

Scanned with CamScanner

मेरा एक निवाला होता, इन सब सभाओं का मुख्य उद्देश्य मैं ही था, उनकी आशा तुम्हीं हों, झूठ बोलना उसकी आदत हो गई है, इस घोर युद्ध का कारण प्रजा की संपत्ति थी।

यदि संयोजक समुच्चयबोधक से जुड़ी हुई एक पुरुष और एक ही लिंग की एक से अधिक एकवचन प्राणिवाचक संज्ञाएँ अप्रत्यय कर्ताकारक में आकर उद्देश्य हों, तो उनके योग से क्रिया उसी पुरुष और उसी लिंग के बहुवचन में आएगी, जैसे किसी वन में हाथी और चिड़िया रहते थे, राम और श्याम सड़क पर खेल रहे हैं, सास और बेटी काम कर रही है, चांडाल के भेष में धर्म और सत्य आते हैं (सत्य.), नाई और ब्राह्मण टीका लेकर भेजे गए, हाथी और गाय एक जगह बाँधे जाते थे, तितली और मरखी ऊँचे नहीं उड़ीं।

उद्देश्यों की पृथकता के अर्थ में क्रिया बहुधा एकवचन में आती है, जैसे, हाथी और गाय अभी पहुँचे है, मेरे पास एक हाथी और एक गाय है, दिल्ली में राजा और उसका मंत्री रहता है, वहाँ एक बुढ़िया और लड़की आई, कुटुंब का प्रत्येक बालक और वृद्ध इस बात का प्रयत्न करता है।

संयोजक समुच्चयबोधक से जुड़ी हुई एक पुरुष और लिंग की दो या अधिक अप्राणिवाचक अथवा भाववाचक संज्ञाएँ यदि एकवचन में आएँ तो क्रिया बहुधा एकवचन ही में रहता है, जैसे, लड़के के देह में केवल लोहू और मांस रह गया है, उसकी बुद्धि का बल और राजा का अच्छा नियम इसी एक काम से मालूम हो जावेगा। (गुटका.) मेरी बातें सुनकर महारानी को हर्ष तथा आश्चर्य हुआ, कुँए में से घड़ा और लोटा निकला, कठोर संकीर्णता में क्या कभी बालकों को मानसिक पुष्टि, चित्त की विस्तृत, और चरित्र की बलिष्ठता हो सकती है।

यदि भिन्न-भिन्न लिंगों की दो (वा अधिक) प्राणिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में आवे तो क्रिया बहुधा पुल्लिंग बहुवचन में आती है, जैसे, राजा और रानी भी मूर्छित हो गए, राजा और मंत्री उद्यान को जा रहे हैं, कुमार और राम बातें करते हुए दिखाई दिए, राजा और मंत्री बहुत प्यार करते थे, बैल और गाय चरते हैं। कई एक द्वंद्व समासों का प्रयोग इसी प्रकार होता है, जैसे, स्त्री पुत्र भी अपने नहीं रहते, बेटाबेटी सबके घर होते हैं, उनके माँ बाप गरीब थे।

यदि भिन्न लिंग, वचन की एक से अधिक संज्ञाएँ अप्रत्यय कर्ताकारक में आवें तो क्रिया के लिंग अंतिम कर्ता के अनुसार होते हैं, जैसे, महाराज और समूची सभा उसके दोषों को भली-भाँति जानती है। गर्मी और हवा के झकोरे और भी क्लेश देते थे, नदियों में रेत और फल फलियाँ खेतों में है, इसके तीन नेत्र और चार भुजाएँ थीं, ईसा की जीवनी में उनके हिसाब का खाता तथा डायरी न मिलेगी।

भिन्न-भिन्न पुरुषों के कर्ताओं में यदि उत्तम पुरुष आवे, तो क्रिया उत्तम पुरुष में होगी, और यदि मध्यम तथा अन्य पुरुष कर्ता हों, तो क्रिया मध्यम पुरुष रहेगी, जैसे, हम और तुम वहाँ चलेंगे, तू और वह कल आना, तुम और ये कब आओगे, वह और मैं साथ पढ़ती थी, हम और यूरोप के सभ्य देश इस दोष से बचे हैं।

जब अनेक संज्ञाएँ कर्ताकारक में आकर किसी एक ही प्राणी व पदार्थ को सूचित करती है, तब उनकी क्रिया एकवचन में आती है, जैसे यह प्रसिद्ध नाविक और प्रवासी सन् 1406 ई. में परलोक को सिधारा, उनके वंश में कोई नामलेवा और पानीदेवा नहीं रहा।

यही नियम पुस्तकों आदि के संयुक्त नामों में घटित होता है, जैसे, गीता इंडियन प्रेस से छपी है, रामायण किसकी लिखी हुई है।

यदि कोई कर्ता विभाजक समुच्चबोधक के द्वारा जुड़े हों तो अंतिम कर्ता क्रिया से अन्वित होता है, जैसे, इस काम में कोई हानि अथवा लाभ नहीं हुआ, मैं या मेरा भाई जायेगा, पोथियाँ या साहित्य किस चिड़िया का नाम है, ये अथवा तुम वहाँ ठहर जाना।

यदि एक वा अधिक उद्देश्यों का कोई समानाधिकरण शब्द हो तो क्रिया उसी के अनुसार होती है, जैसे, नवनिधि, बारहों प्रयोग, आदि देवता आते हैं (सत्य.), मर्द, औरत सभी चौकोर चेहरे के होते हैं (सर.), धन धरती सबका सब हाथ से निकल गया, स्त्री और पुत्र कोई साथ नहीं जाता, ऐसी पतिव्रता स्त्री, ऐसा आज्ञाकारी पुत्र, और ऐसे तुम आप-यह संयोग ऐसा हुआ मानो श्रद्धा और वित और विधि तीनों इकट्ठे हुए, सुरा और सुंदरी दो ही तो प्राणियों को पागल बनाने की शक्ति रखती हैं।

सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक कृदंत से बने हुए कालों के साथ जब सप्रत्यय कर्ताकारक और अप्रत्यय कर्मकारक आता है, तब कर्म के लिंग वचन, पुरुष के अनुसार क्रिया के लिंगादि होते हैं जैसे, लड़के ने पुस्तक पढ़ी, हमने खेल देखा है, स्त्री ने चित्र बनाए थे, पडितों ने यह लिखा होगा।

कर्मकारक और क्रिया के अन्वय के अधिकांश नियम उद्देश्य और क्रिया के अन्वय के ही समान है, इसलिए हम उन्हें यहाँ संक्षेप में लिखकर उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट करते हैं–

Scanned with CamScanner

(अ) एक ही लिंग और एकवचन की अनेक प्राणिवाचक संज्ञाएँ अप्रत्यय कर्मकारक में आवें, तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में आती है, जैसे, मैंने घोड़ा और गधा मोल ली, शिकारी ने लोमड़ी और शेर देखा, राजा ने वहाँ भांजा और बेटा भेजें।

(आ) यदि अनेक संज्ञाओं से पृथकता का बोध हो, तो क्रिया एकवचन में आएगी, जैसे मैंने एक गाय और एक कुत्ता बेचा, राजा ने अपना भांजा और बेटा, भेजा, महाजन ने एक बैल और एक घोड़ा मोल ली।

(इ) यदि एक ही लिंग की एकवचन अप्राणिवाचक अथवा भाववाचक संज्ञाएँ कर्म हों, तो क्रिया में आयेगी, जैसे मैंने तालाब में से गिलास और घड़वा निकाला, राम ने सुआ और कंधा संदूक में रख दी।

(ई) यदि भिन्न-भिन्न लोगों को अनेक प्राणिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में आवें, तो क्रिया बहुधा पुल्लिंग बहुवचन में आती है, जैसे, हमने गधा और घोड़ा देखे, राम ने नौकर और नौकरानी भेंजे।

(उ) यदि भिन्न-भिन्न लिंग, वचन की एक से अधिक संज्ञाएँ अप्रत्यय कर्मकारक में आवें, तो क्रिया अंतिम कर्म के अनुसार होगी, जैसे, उसने मेरे लिए कमीजें और कई पाजामे तैयार किए थे (विचित्र), उसने वहाँ देखरेख और प्रबंध किया।

(ऊ) जब अनेक संज्ञाएँ अप्रत्यय कर्मकारक में आकर किसी एक ही वस्तु को सूचित करती है, तब क्रिया एकवचन में आती है, जैसे, मैंने राम और श्याम पाया है, लड़की ने 'रामायण' पढ़ी।

(ऋ) यदि कई कर्म विभाजक समुच्चयबोधक के द्वारा जुड़े हों, तो क्रिया अंतिम कर्म के अनुसार होती है, जैसे, तुमने कमीज या पाजामा लिया होगा, राम ने कॉपी, रजिस्टर अथवा पेंसिल पाई थी।

(ए) यदि कर्म या कर्मों का कोई समानाधिकरण शब्द हो, तो क्रिया इसी के अनुसार होती है जैसे, राम ने कपड़ा, पैसा और मकान सब कुछ पाया। अनिल ने घर, पुत्र, पुत्री, सब कुछ त्याग दिया।

(ऐ) यदि अपूर्ण सकर्मक क्रियाओं की पूर्ति लिंग वचन से कर्म के लिंग वचन भिन्न हों, तो क्रिया के लिंग वचन पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं, जैसे, उसने अपना शरीर खत्म कर लिया, हमने अपनी टांग पत्थर कर ली।

(ओ) यदि कर्मपूर्ति के अर्थ की प्रधानता हो, तो कभी-कभी क्रिया के लिंग वचन उसी के अनुसार होते हैं, जैसे, दिल भी भगवान ने क्या ही चीज बनाई है।

नीचे लिखी रचनाओं में क्रिया सदैव पुल्लिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में रहती है।

(क) यदि अकर्मक क्रिया या उद्देश्य सप्रत्यय हो, जैसे, मैंने नहीं खाया, लड़की को नहाना था, यह बात जानते ही उसे रोना आया।

(ख) यदि सकर्मक क्रिया का उद्देश्य और मुख्य कर्म, दोनों सप्रत्यय हो, जैसे मैंने राम को देखा, उन्हें बहुमूल्य फर्श पर लिटाया जाता (सर.), गीता ने सहेलियों को बुलाया, साधु ने स्त्री को पागल समझा।

(ग) जब वाक्य अथवा अकर्मक क्रियार्थक संज्ञा उद्देश्य हो, जैसे, मालूम होता है कि आज बारिस गिरेगी, सबेरे उठना लाभकारी होता है।

(घ) जब प्रत्यय उद्देश्य के साथ वाक्य अथवा क्रियार्थक संज्ञा कर्म हों जैसे, राम ने कहा कि मैं जाऊँगा, तुमने बात करना न सीखा।

यदि दो वा अधिक संयोजक समानाधिकरण वाक्य 'और' संयोजक समुच्चयबोधक से जुड़े हों और उनमें भिन्न-भिन्न रूपों के (सप्रत्यय तथा अप्रत्यय) कर्ताकारक आवे तो बहुधा पिछले कर्ताकारक का अध्याहार हो जाता है, परंतु क्रिया के लिंग वचन पुरुष यथानियम (कर्ता, कर्म अथवा भाव के अनुसार) रहते है, जैसे, मैं बहुत देशों में घूम चुका हूँ, पर ऐसी जनसंख्या कहीं नहीं देखी (विचित्र.)।

Scanned with CamScanner

विश्लेषण

'विश्लेषण' लिखित संप्रेषण का महत्त्वपूर्ण अंग है। किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व कई दृष्टियों से उसका विषय विश्लेषण कर परखना जरूरी हो जाता है। अंतिम निर्णय पर पहुँचने से पहले उसे विषय से सम्बन्धित व्यक्तियों और स्थितियों सकात्मक और नकारात्मक पहलुओं का गम्भीर विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है। यदि गंभीर विश्लेषण किए बिना, लोगों की राय जाने बिना लेखक किसी पूर्वाग्रह के कारण अपना मत दे देता है तो निष्पक्ष निर्णय नहीं हो पाता है इसलिए किसी भी ज्लवंत और विवादास्पद मुद्दे पर निर्णय देते समय संवाददाता को चाहिए कि वह घटनास्थल से जुड़े सभी चश्मदीद गवाहों, पात्रों के मनोभावों, विचारों एवं उनकी मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करे। किसी भी सम्पादकीय लेख में किसी विवादास्पद मुद्दे की पृष्ठभूमि के संदर्भ में तक-वितर्क सहित विश्लेषण करते हुए अंत में संपादक तटस्थ रहकर जनहित में अपना निर्णय देता है। उदाहरण स्वरूप यहाँ एक विवादास्पद मुद्दे पर विश्लेषण करके निष्पक्ष निर्णय की प्रक्रिया को देख सकते हैं।

विषय : कश्मीरी पंडितों को घाटी में फिर से बसाने की योजना

वर्तमान स्थिति: पंडितों को घाटी में फिर से बसाने की योजना को फिलहाल लागू न किए जाने की सबसे बड़ी वज़ह यह है कि घाटी में भले ही आतंकवाद का प्रकोप कम हो गया है, लेकि राजनीतिक रूप से हालात सामान्य नहीं है। सबसे व्यावहारिक बात यह है कि कश्मीरी पंडितों को बसाने की कोई सुनियोजित योजना बनाने की बजाए पहले घाटी में माहौल सामान्य करने की कोशिश की जाए। जब स्थितियां सामान्य होने लगेंगी। तो अपने आप सहज रूप से कश्मीरी पंडितों की वापसी मुमकिन होगी।

भूतकालिक स्थिति: सन् 2008 में ऐसी ही एक परियोजना तैयार की गई थी, जिसमें कश्मीरी पंडितों को मुसलमान परिवारों के साथ बसाने की योजना थी, इस योजना के तहत 200 फ्लैट्स बनवाए गए थे, पर योजना नाकाम रही।

भाजपा ने 2014 के चुनाव के दौरान पंडितों को घाटी में वापस लाने का

वायदा किया था, इस वायदे को पूरा करने के लिए यह योजना प्रस्तावित की है। शुरू में ऐसा लग रहा था कि मुख्यमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद इस योजना को आगे बढ़ाने के इच्छुक हैं, लेकिन उन्होंने इस योजना के विरोध में बयान देकर अपना रूख साफ कर दिया है। लगभग एक महीना पहले पीडीपी सरकार और कश्मीर के मुख्यमंत्री ने मसर्रत आलम जैसे कई खूंखार आतंकवादियों की रिहाई का निर्णय लेते समय केंद्र सरकार से कोई सलाह नहीं ली थी। घाटी में बाढ़ का मौका उठाकर आतंकवादी पाकिस्तान से कश्मीर में आ रहे हैं।

3. समस्या पर निष्पक्ष निर्णायक टिप्पणी

अंत में कहा गया कि कश्मीरी पंडितों को घाटी में फिर से बसाने की विवादास्पद योजना की जगह घाटी में हालात सामान्य होने की प्राथमिकता होनी चाहिए।

दिनांक 12 अप्रैल, 2015
जी न्यूज, डी.एन.टेस्ट सेसाभार

विषय/घटना से जुड़े महत्त्वपूर्ण लोगों का इंटरव्यू लेकर जन सर्वेक्षण से लोगों की राय लेकर भूतकालिक और वर्तमान कालिक आंकड़ों और घटनाओं का जिक्र करना आवश्यक होता है।

Scanned with CamScanner

व्याख्या

किसी भी सारगर्भित वाक्य, काव्य पंक्ति, कहावत अथवा लोकोक्ति के मुख्य भाव को पूरी तरह स्पष्ट करने के लिए व्याख्या की जाती है। उसे स्पष्ट करने के लिए उदाहरणों का आश्रय लिया जाता है और उसके विपक्ष में तर्कों को काट कर भूल कथ्य को विस्तार दिया जाता है।

आधुनिक वैज्ञानिक तर्क सम्मत युग में व्याख्या का अपना ही महत्त्व है। प्राचीन काल में वेदों की रचना सूत्र-ग्रन्थों के रूप में हुई तो उनको समझाने के लिए संहिता ग्रंथ लिखे गए। संस्कृत साहित्य तो सक्तियों एवं सुभाषितों का विशाल भंडार है। विश्व की प्रत्येक प्रचलित एवं जीवित भाषा में सूक्तियां, मुहावरे अवश्य रहते हैं, उनके मूल भाव को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए व्याख्या की आवश्यकता पड़ती है, जिसमें तर्क द्वारा कथ्य की पुष्टि की जाती है।

आधुनिक भौतिकवादी युग में प्रत्येक वस्तु उपयोगिता उसकी उपादेयता के आधार पर की जाती है। व्याख्या के अभ्यास से विद्यार्थियों को पर्याप्त लाभ होता है। वे किसी भी विषय पर निर्भय होकर लिखने के अभ्यस्त हो जाते हैं। उनमें किसी भी काव्यांश, गद्यांश अथवा सूक्त वाक्य के विस्तार और व्याख्या करने की निर्णयात्मक बुद्धि का विकास होता है। वे स्वतंत्र रूप से अपने विचार समूह परिचर्चा, वाद-विवाद प्रतियोगिता में रख सकते हैं।

व्याख्या का अभ्यास पत्रकारिता एवं संपादन के क्षेत्र में भी विशेष महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। पत्रकार किसी विषय को देखकर या सुनकर उस विषय पर मर्मस्पर्शी लेख-लिख सकता है, उस विषय पर अपना स्वतंत्र मत प्रकट कर सकता है, इससे उनमें आत्मविश्वास तो उत्पन्न होता ही है, साथ में लेखनी एवं भाषा पर भी अधिकार हो जाता है। उनमें शब्द चयन की प्रतिभा जागृत होती है और वाक्य रचना पर पकड़ मजबूत हो जाती है।

आत्म-निर्भरता

आत्म-निर्भरता से तात्पर्य है अपने कार्य में अपने ऊपर ही आश्रित रहना

अर्थात् मनुष्य जब अपने सभी कार्य स्वयं करता है तब वह आत्म-निर्भर कहलाता है। आत्म-निर्भरता मनुष्य को किी के आधीन बनने में रोकती है। यदि एक वाक्य में कहा जाय तो आत्म-निर्भरता मानव-जीवन की उन्नति की कुंजी है। मनुष्य शिक्षा के द्वारा जीवन के विकास की अनेक बातें सीखता है, उसी में वह यह भी जान जाता है कि जीवन की वास्तविक उन्नति स्वयं के ऊपर निर्भर करती है। 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं' की कहावत के अनुसार स्वतन्त्र व्यक्ति ही जीवन में उन्नति करता है। लेकिन स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए व्यक्ति का आत्म-निर्भर होना बहुत जरूरी है। आत्म-निर्भरता हमारी गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली की मूलाधार भावना थी। विद्यार्थी प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक अपने सारे कार्य स्वयं करता था-इसी आत्म-निर्भरता की भावना के कारण प्राचीन भारतीय पंडितों ने कहा था--'विद्यार्थिनः कुतो सुखम्' अर्थात् विद्यार्थी को सुख कहां है? क्योंकि, जो विद्यार्थी आत्म-निर्भर होगा उसे पढ़ाई के अतिरिक्त अपना सारा कार्य स्वयं करना पड़ेगा, ऐसी अवस्था में सुख कहां है? इसलिए हमारे ज्ञान की एक प्रमुख इकाई आत्म-निर्भरता थी।

सबै दिन होत न एक समान

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। किसी की भी गति सदा एक-सी नहीं रहती। जो सूर्य प्रातःकाल उदित होकर दोपहर तक निरंतर अपने ताप को बढ़ाता जाता है वही सान्ध्यवेला में निस्तेज हो जाता है। जो आज 'भूख से तड़पता फिरता है वह कल अनेक प्रकार के व्यंजनों का भोग करता पाया जाता है। जो आज धन-सम्पदा के अपार सागर में तैरता हुआ पाया जाता है वह अगले दिन दाने-दाने को तरसता देखा जाता है। जो आज विपत्तियों में पीड़ित हो आठ-आठ आंसू बहाना दीखता है वह अगले दिन आनन्द से फूला नहीं समाता। जो आज उन्नति के शिखर पर चढ़ा हुआ दिखाई देता है वह कल अवनति के गर्त्त में गिरा पाया जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि इस संसार में किसी की भी गति सदा एक-सी दिखलाई नहीं देती। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है–

संसार में किसका समय है एकसा रहता सदा।
है निशि-दिवा सी घूमती सर्वत्र विपदा-सम्पदा।।
जो आज एक अनाथ है नरनाथ कल होता वही।
जो आज उत्सव मग्न है कल शोक से रोता वही।।

Scanned with CamScanner

अनुवाद

ग्लोब्लाइजेशन के इस युग में भौगोलिक दूरियां कम हो गई हैं। पृथ्वी के एक हिस्से में कुछ भी घटित होता है तुरंत उसका विश्वव्यापी प्रभाव दिखाई देता है। अलग-अलग देशों की अलग-अलग भाषाएं, उपभाषाएं और बोलियां होने के बावजूद अनुवाद के ज़रिए संदेशों को विश्व व्यापी बनते देर नहीं लगती। पूरे विश्व के लोग एक दूसरे से विभिन्न स्तरों पर एक दूसरे के करीब आते जा रहे हैं। व्यापार संप्रेषण, यात्रा, साहित्य, चिंतन, ज्ञान-विज्ञान के विकास में अनुवाद का महत्त्व, योगदान देखा जा सकता है। सामान्य कामकाज से लेकर वैज्ञानिक व तकनीकी अध्ययन तक में अनुवाद की आवश्यकता रहती है। अनुवाद ने विश्व को सोचने-समझने और निकट लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान एवं व्यापारिक सहयोग की दृष्टि सें अनुवाद ने अपनी विशिष्टता सिद्ध कर दी है। इसके अलावा भाषा-भाषियों की संस्कृतियों को भी पाटने का महत्त्वपूर्ण कार्य अनुवाद से ही संभव हुआ है।

विद्वानों का एक वर्ग अनुवाद को कला मानता है, दूसरा वर्ग अनुवाद को विज्ञान के रूप में मान्यता प्रदान करता है। कुछ विद्वान अनुवाद को एक शिल्प की श्रेणी में रखते हैं तो कुछ इसे सिर्फ कौशल मानते हैं। वस्तुतः अनुवाद एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है, जो पाठ-सापेक्ष होने के साथ-साथ अनुवादक के व्यक्तित्व को भी अंकित करती है। अनुवाद भाषा, संस्कृति तथा समाज में अलगाव की स्थितियां पैदा करने वाले तत्त्वों को आपस में जोड़कर प्रगति की नई दिशाओं में मोड़ सकता है।

'अनुवाद' शब्द 'अनु' उपसर्ग के साथ 'वद' धातु के संयोग से बना है। 'वद' धातु में 'धज' प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बनता है। 'वद' का तात्पर्य है–बोलना तथा 'अनु' का अर्थ है–पीछे, 'बाद में' आदि। अतः इसका अर्थ हुआ–एक बार कही हुई बात को बाद में (अनु) दुबारा कहना। इसमें शब्द रूप के स्थान पर अर्थ रूप की पुनरावृत्ति होती है। प्रत्येक भाषा की प्रवृति, उसका शब्द-भंडार एवं व्याकरण अलग-अलग होता है, ऐसी स्थिति में अर्थ की समानता को अनुवाद के माध्यम से प्रकाशित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अंग्रेजी में इसके लिए 'ट्रांसलेशन' शब्द है, जो लैटिन शब्द 'ट्रांस' तथा 'लेशन' शब्द के योग से बना है। 'ट्रांस' का अर्थ है–'पार' और 'लेशन' का अर्थ है–'पार' और 'लेशन' का अर्थ है–'ले जाने की क्रिया'। अतः ट्रांसलेशन का अर्थ हुआ 'इस पार से दूसरे पार ले जाना'। डॉ. पूरन चंद टण्डन के अनुसार–'अनुवाद एक सेतु है और अनुवाद वाहक 'अनुवादक' को इस पार से उस पार तक सामग्री उठाकर ले जाने का दायित्व दिया जाता है। परन्तु शर्त होती है–उस सामग्री को पूर्णतः यथावत पहुँचाना। न घटे, न बढ़े। इस लक्ष्य की प्राप्ति में जो अनुवादिक जितना सफल हो जाता है, अनुवाद भी उतना ही सफल और प्रासंगिक सिद्ध होता है। उस पार स्रोत भाषा है और इस पार लक्ष्य भाषा। अनुवादक मध्यस्थ है।''

अनुवाद-प्रक्रिया

स्रोत भाषा के विचार, भाव तथा कथ्य को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने के लिए अनुवादक को जिस विशिष्ट क्रिया विधि से गुजरना पड़ता है। उसे अनुवाद की प्रक्रिया कहा जा सकता है।

अनुवाद-प्रक्रिया के बारे में पश्चिमी विद्वान नाइडा, न्यूमार्क तथा बाथगेट ने कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं। नाइडा ने अनुवाद-प्रक्रिया के तीन सोपान हैं–(1) विश्लेषण (2) अंतरण तथा (3) पुनर्गठन।

स्रोत भाषा ———————— लक्ष्य भाषा
(मूलपाठ) (अनूदित पाठ)
| |
विश्लेषण ——— अंतरण ——— पुनर्गठन

बाथगेट ने अनुवाद प्रक्रिय को विस्त त एवं व्यावहारिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए इसके सात सोपान माने हैं–(1) मूल भाषा का समन्वयन (2) विश्लेषण (3) बोधन (4) पारिभाषिक अभिव्यक्ति (5) पुनर्गठन (6) पुनरीक्षण (7) पर्यालोचान एवं लक्ष्य भाषा पाठ (अनुदित पाठ)

बोधन ——— पारिभाषिक ——— पुनर्गठन
अभिव्यक्ति
लक्ष्य भाषा

विश्लेषण पुनरीक्षण
(संशोधन)

मूल पाठ पर्यालोचन
समन्वयन अनूदित पाठ
(स्रोत भाषा)

स्पष्ट है कि अनुवाद की मूलभूत इकाई मूल-पाठ का बोधन तथा उसकी लक्ष्य-भाषा में अभिव्यक्ति के बीच की सैद्धान्तिक प्रक्रिया ही अनुवाद की प्रक्रिया है। अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक को मूल पाठ की विषय वस्तु, विषय अभिव्यक्ति की शैली, मूलपाठ की व्याकरणिक संरचना तथा पाठ के सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ आदि की ओर विशेष ध्यान देना पड़ता है। इसमें विभिन्न स्तरों पर विशेष सतर्कता की जरूरत होती है। किसी एक भाषा में स्वतंत्र लेखन सरल है क्योंकि यदि आप उस भाषा के जानकार हैं, भाषा के साथ जुड़ी संस्कृति और समाज के जानकार हैं तो भावों और विचारों की अभिव्यक्ति में कोई कठिनाई नहीं होगी लेकिन किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा अभिव्यक्त भाव एवं विचारों को उसके मूल रूप को सुरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना अत्यंत कठिन कार्य है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है। दोनों भाषाओं के बीच अर्थगत सेतु का निर्माण अनुवादक तभी कर सकता है जब इस काम में इसे महारत हासिल हो। जरा सी असावधानी से अर्थ का अनर्थ हो सकता है। एक समाचार पत्र में मुख्य समाचार था–

दिल्ली सरकार द्वारा भगाई गई लड़कियों के लिए योजना' स्पष्ट है कि यह अनुवाद गलत है। अंग्रेजी वाक्य रचना में Indirect speech से by' शब्द का प्रयोग किया जाता है। by हिन्दी अनुवाद द्वारा। परन्तु हिन्दी की वाक्य रचना डायरेक्ट स्पीच में है। हिन्दी वाक्य रचना में अनुवाद होगा–

'दिल्ली सरकार की भगायी गई लड़कियों के लिए योजना' इसी प्रकार भाषण आदि के दौरान अक्सर कुछ शब्दों का प्रयोग केवल विचारों के बीच खालीपन को भरने के लिए कर दिया जाता है। जैसे– 'यूसी', 'बैल', 'आई मीन' शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता। इनका प्रयोग अक्सर भाषा के प्रवाह को बनाए रखने के लिए होता है। अनुवाद करते समय देखना होता है कि कहाँ इनका प्रयोग करें और कहां नहीं। 'यू सी' के लिए अगर कहें कि 'आप देखिए' तो बड़ा अटपटा लगेगा। बोलचाल में हम कहते हैं–देखिए। इसलिए अच्छा अनुवाद भाषा की प्रकृति और उसकी सीमाओं में रहकर ही किया जा सकता है। अनुवाद-प्रक्रिया को अंग्रेजी शब्द Translation के वर्णों के आधार पर एक सूत्र

Scanned with CamScanner

अनुवादक के गुण और योग्यता

वर्तमान समय में अनुवाद कला और विज्ञान का एक विलक्षण माध्यम है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद एक और साहित्यिक–सांस्कृतिक अग्रदूत का काम करता है तो दूसरी ओर वह वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों के साथ अपना संबंध जोड़कर हमारे भौतिक जीवन को भी श्रेष्ठ बनाने का अहम काम करता है।

मूल रचनाकार सर्जन कर्म करते हुए अपनी कल्पनाओं और भावनाओं को अभिव्यक्त करने में आजाद होता है। किन्तु यह आजादी अनुवादक के पास नहीं होती। अनुवादक मूल रचना की सीमा रेखा में पूरी तरह बंधा होता है। उस सीमा रेखा से बाहर जाकर लक्ष्य भाषा में वह अपनी ओर से कुछ भी नहीं जोड़ पाता है। उसे रचनाकार की शैली तथा भाषा–प्रवाह के साथ पाठकों की बोधन तथा ग्राह्य क्षमता के प्रति भी सतर्क रहना पड़ता है। ऐसा करते समय वह मूल रचना को उसके निजत्व तथा संवेदन के सभी स्तरों को लेखक की ही शैली के अनुरस पेश करता है। साथ ही साथ वह पाठकों को रचना के विभिन्न आयामों से परिचित कराने के लिए भी प्रयत्नशील रहता है। मराठी के प्रसिद्ध नाटककार मामा वटरेकर ने कहा है–"लेखक होना आसान है किन्तु अनुवादक होना कठिन है। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्व. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी कहा है–"एक प्रकार से मौलिक लेख लिखना आसान है, पर किसी दूसरी भाषा से अनुवाद करना बहुत कठिन होता है। मेरा निजी अनुभव है कि मैं अंग्रेजी से हिन्दी में और हिन्दी से अंग्रेजी में उतनी आसानी से अनुवाद नहीं कर सकता, जितनी आसानी से इन दोनों भाषाओं में लिख या बोल सकता हूँ। गहन विषयों का अनुवाद तो और भी कठिन होता है।" स्पष्ट है कि अच्छे अनुवादक के पास भाषा समुचित ज्ञान, अनुवाद विषय की पकड़, सशक्त भाषा शैली, संवेदनशीलता, श्रम

Scanned with CamScanner

साध्यता, निष्पक्ष और संतुलित दृष्टिकोण, अभिव्यक्ति कौशल आदि गुणों का होना आवश्यक है। अतः हम कह सकते हैं कि एक अच्छे अनुवादक में निम्नांकित गुणों का समावेश होना चाहिए।

1. दोनों भाषाओं पर अधिकार–अनुवादक का सर्वप्रथम गुण है–स्रोत और लक्ष्यभाषा का सम्यक् ज्ञान और उन पर समान अधिकार। क्योंकि यदि वह मूल भाषा में ही विषय को समझ नहीं पाएगा तो अनूदित भाषा में उस विषय को कैसे सही रूप में पेश कर पाएगा। प्रत्येक भाषा की अभिव्यंजक शक्ति में उस भाषा के मुहावरे और लोकोक्तियों का बड़ा हाथ होता है। इसका अनुवाद भी कठिन होता है। इसके लिए भाषा की प्रकृति और स्वरूप पर पूर्ण अधिकार होना आवश्यक है।

कुछ उदाहरण देखिए–

हिन्दी में 'गर्जने वाले बादल बरसते नहीं' अंग्रेजी में–Barking dogs reldom bite होगा।

'जितनी लम्बी चादर हो उतने ही पैर फैलाना चाहिए अंग्रेजी में–Cut your coat according to your cloth होगा।

बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद अंग्रेजी में–1. A blind man is no judge of colours. 2. Do not cost pearls before a swine होगा।

'दूर के ढोल सुहावने लगते है।' का Distance tends enchantment to the eyes होगा।

'घर की मुर्गी दाल बराबर' का अंग्रेजी में–Lamiliarity breads contemp होगा।

अतः हर शब्द, हर लाक्षणिक प्रयोग और हर वाक्य के स्वरूप और आशय का पूरा ध्यान दिए बिना अच्छा अनुवाद नहीं हो सकता।

2. अनुवाद विषय पर पूरी पकड़–स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने के लिए अनुवादक को विषय का संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए। किसी भी सामग्री को उठाकर बिना संपूर्ण ज्ञान के अनुवाद करने से अनूदित रचना हास्यास्पद बन सकती है। अनुवाद के समय संदर्भ-ज्ञान की महत आवश्यकता होती है। अन्यथा अर्थ के अनर्थ की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। जैसे Balance शब्द का सामान्य अर्थ 'संतुलन' होता है किन्तु आर्थिक क्षेत्र में इसका अर्थ 'बकाया राशि' है। मोबाइल के क्षेत्र में भी 'बकाया राशि' ही है। अतः अनुवादक को उन नयी अवधारणाओं से भी परिचित होना चाहिए, जो रोज नयी आ रही हैं। इसके लिए इसका बहुश्रुत होना आवश्यक है।

आज भी हिन्दी के समाचार कुछ सीमा तक अंग्रेजी के समाचारों पर निर्भर होते हैं। इस कार्य के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। यह कार्य अति शीघ्र किया जाता है। समाचार का तत्काल ऐसा अनुवाद करना पड़ता है, जिसमें मूल तथ्य का सही अर्थ भी प्रकट हो तथा सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी समझ जाए। कई बार ऐसे वाक्यांश, शब्द अथवा कथन अंग्रेजी में प्रयुक्त होते हैं, जिनका अनुवाद केवल भाषा-ज्ञान से नहीं अपितु विवेक, प्रतिभा तथा बुद्धि-कौशल से ही संभव है, एक वाक्य देखिए– "PM Modi has decided to host the summit in Delhi. 'हॉस्ट' क्रिया का अर्थ मेज़बानी करना होता है, परन्तु हिन्दी में बैठक को मेज़बानी करना नहीं लिखा जाता। अतः इसे अस प्रकार लिखा जाएगा–

पी.एम. मोदी ने दिल्ली में शिखर बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया है।

इसी प्रकार अंग्रेजी के कुछ शब्द हिन्दी में दो-दो अर्थ ध्वनित करते हैं। उदाहरण के 'Tribute' लिए शब्द को ही लें। यह शब्द 'श्रद्धांजलि' के लिए भी और 'सराहना' के लिए भी प्रयुक्त होता है। जबकि हिन्दी में 'श्रद्धांजलि' शब्द केवल 'मृत व्यक्ति को श्रद्धांजलि देने के लिए ही प्रयुक्त किया जाता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को अपने विवेक का इस्तेमाल करके यह देखना होगा कि शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया जाए। इसी प्रकार अंग्रेजी में संत से मिलने या किसी नेता से मिलने के लिए 'Visit' क्रिया का प्रयोग किया जाता है किंतु हिन्दी में संत के लिए इस क्रिया का अर्थ 'दर्शन करना' और नेता के लिए भेंट करना या मुलाकात करना होगा। ये सब अनुवादक तभी कर सकेगा, जब उसे इसका सूक्ष्म व्यावहारिक ज्ञान होगा।

3. सशक्त भाषा शैली–लक्ष्य भाषा यानी जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है, उस पर अनुवादक पूर्ण अधिकार होना चाहिए। भाषा केवल भाषा नहीं है, भाषा का एक-एक शब्द लक्ष्य भाषा की संस्कृति, परम्परा, इतिहास से जुड़ा होता है। अतः उस शब्द से जुड़ी अनेक अर्थ छायाओं के साथ सम्पृक्त संस्कृति का भी उसे पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। हिन्दी भाषा में प्रयुक्त 'गंगा जल', शिवलिंग पर चढ़ाए जाने वाले 'जल' में जो पवित्रता, पूजा, श्रद्धा और भक्ति भाव है, वह पानी में नहीं है।

4. संवेदनशीलता–अनुवाद एक प्रकार का 'परकाया प्रवेश' होता है। अर्थात् अनुवादक मूल कृति की संवेदना को आत्मसात करके ही उसको दूसरी

Scanned with CamScanner

भाषा में प्रस्तुत करता है। लेखक मूल कृति में स्वयं को आसानी से अभिव्यक्त कर लेता है, पर अनुवादक के लिए उस अभिव्यक्ति को दूसरी भाषा में पुनः अभिव्यक्त करना सरल नहीं होता। उसे एक साथ पाठक, आस्वादक, आध्येता एवं सर्जक की भूमिका निभानी पड़ती है। इसके लिए उसे मूलपाठ की संवेदना को गहराई से अनुभव करना पड़ता है। और एक अन्य भाषा की प्रकृति एवं स्वरूप के अनुसार इस प्रकार ढालना होता है कि वह अनुवाद न लगकर मूल पाठ लगे। इसीलिए अनुवाद भाषांतर न होकर पुनः सृजन होता है। एक संवेदनशील, प्रतिभाशाली अनुवादक यह कार्य भली प्रकार से कर लेता है।

5. **विवेकशीलता**–आदर्श या सफल अनुवाद का मूलमंत्र है–'न तोड़िए, न जोड़िए।' अर्थात् अनुवादक को मूल पाठ की सीमा में रहकर ही कार्य करना होता है। मूल रचना की कोई भी सामग्री लक्ष्य भाषा में छूटनी भी नहीं चाहिए और उसमें कुछ अतिरिक्त जुड़ना भी नहीं चाहिए। इस प्रक्रिया में अनुवादक को अपने व्यक्तित्व का भी परिचय कराना होता है, किन्तु एक सीमा तक है। सीधी-सी बात है कि अनुवादक एक तटस्थता की स्थिति में मूल पाठ को विस्तृत किए बिना अन्य भाषा में व्यक्त करता है। इस दौरान कई स्थल ऐसे भी आ सकते हैं जो अनुवादक के मन को न भाएं और कुछ स्थल अनुवादक को अति प्रिय लग सकते हैं। दोनों स्थितियों में उसे अपनी विवेकशीलता परिचय देना चाहिए। उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि उसका सर्जक रूप मूल सर्जक पर हावी न हो। डॉ. जॉनसन न तो अनुवादक को चेतावनी देते हुए लिखा भी है–

"Never try to excel the author, you translate" भोलानाथ तिवारी ने एक जगह लिखा है–"आदर्श अनुवाद सिरिंज की वह सुई है, जो सिरिंज की दवा को ज्यों का त्यों मरीज के शरीर में पहुँचा देती है।" परन्तु अनुवाद विशेषज्ञ डॉ. पूरन चंद टंडन मानते हैं कि जब हम इत्र को एक शीशी से दूसरी शीशी में डालते हैं तो थोड़ा सा इत्र हवा में उड़ जाता है। इसी तरह स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनूदित करते समय पूरा भाव ज्यों का त्यों नहीं आ पाता है।

श्रमसाध्यता

अनुवाद में अभ्यास की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यह प्रक्रिया मूल पाठ के अध्ययन से शुरू होकर, उसके विभिन्न संदर्भों को परखते हुए लक्ष्य भाषा के स्वरूप के अनुरूप उसका पुनर्समायोजन कर उसकी अभिव्यक्ति पर समाप्त होती है। एक पाठक एवं समीक्षक की दृष्टि से कई बार संशोधन करने पड़ते हैं। इन सबके लिए उसमें धैर्य के साथ-साथ परिश्रमी होना भी आवश्यक है।

सफल अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए अनुवादक में उपरोक्त सभी गुणों का समावेश होना आवश्यक है। लक्ष्य है–स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक उसकी प्रकृति व विशेषताओं के अनुरूप पहुँचाना। यह तभी संभव है जब अनुवादक यथास्थान सही रूप में अपनी प्रतिभा का परिचय भी दे और तटस्थ रहते हुए अनुवाद भी करे। तभी वह अनूदित रचना को श्रेष्ठ अनुवाद की संज्ञा से अभिहीत कर सकता है।

कम्प्यूटर कृत शाब्दिक अनुवाद का नमूना देखिए–

English	Hindi
There are many Hindi short Stories which have gotten acclimation from all over the world, Hindi has a long tradition of short stories reflecting the culture and traditional values of the people living in Northern India. Hindi is the mother tongue of half of the population of India. Although there are many other regional languages like Tamil, Telugu, Malayalam, Kannada, Marathi, Gujarathi and Bengali, Hindi is the most dominant language in India. WE have to read those Hindi Stories in its original script. There are many famous Hindi Writers who have written innumerable short stories in Hindi with their originally and ingenuity. WE have provided two links which will take you to two different pages where you could find a number of Hindi Stories. You are welcome to use this page as you wish.	दुनियाभर से दशानुकूलन मिल गया है, जो कई हिन्दी लघु कहानियां हैं। हिन्दी उत्तरी भारत में रहने वाले लोगों की संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों को दर्शाती लघु कहानियों की एक लंबी परंपरा है। हिन्दी भारत की आबादी का आधे से की मातृभाषा है। तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती और बंगाली जैसे कई अन्य क्षेत्रीय भाषाओं कर रहे हैं, हिंदी भारत में सबसे प्रमुख भाषा है। हम अपने मूल स्क्रिप्ट में उन हिन्दी कहानियों को पढ़ने के लिए है। उनकी मौलिकता और सरलता के साथ हिंदी में असंख्य छोटी कहानियों लिखा है, जो कई प्रसिद्ध हिन्दी लेखक हैं। हम आपको हिंदी कहानियों का एक नंबर मिल सकता है, जहां दो अलग-अलग पन्नों पर ले जाएगा जो दो लिंग प्रदान की है। आप अपनी इच्छानुसार इस पृष्ठ का उपयोग करने के लिए स्वागत कर रहे है।

Scanned with CamScanner